से ~~प्रयोज्य~~ प्रयोज्य का कर्ता णिजन्त अवस्था में कर्म हो ' ऐसा अर्थ करने से इष्टसिद्धि हो जायेगी पुनः ' आणि ग्रहण क्यों किया ? उत्तर देता है - गमयति देवदत्तो यज्ञदत्तं, तमपरः प्रयुङ्क्ते इति गमयति देवदत्तेन यज्ञदत्तं विष्णुमित्रः अर्थात यज्ञदत्तो गच्छति, तं (यज्ञदत्तम्) देवदत्तो गमयति - इसमें णिच् से पूर्व का कर्ता यज्ञदत्त अण्यन्त अवस्था में कर्म होने से द्वितीयान्त हो जाता है, पश्चात तं देवदत्तं अपरः (विष्णुमित्रः) प्रयुङ्क्ते (प्रेरयति) इस प्रेरणा देने से प्रथम ण्यन्त ' गमि ' धातु से पुनः दूसरा णिच् प्रत्यय होता है, इस णिच् प्रत्यय के होने पर गमि + णिच् इसमें पूर्व-प्रयुक्त ' णि ' का णेरनिटि ' से लोप हो जाता है।